जब देश पराधीन था तब भी साहसी लेखकों की कलम आजाद थी : माधव कौशिक

स्वाधीनता संग्राम में लेखक विषय पर साहित्य अकादमी ने आयोजित की संगोष्ठी

नई दिल्ली, 15 अगस्त(नवोदय टाइम्स): देश के साहसी लेखकों की कलम तब भी आजाद थी जब देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। यह बात रविवार को साहित्य अकादमी द्वारा 75वें स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित 'स्वाधीनता संग्राम में लेखक की भूमिका' विषयक संगोष्ठी में अकादमी उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कही। संगोष्ठी में लेखक तरुण विजय ने कहा कि साहित्य अकादमी भारतीय भाषाओं के साहित्य को परस्पर जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। संगोष्ठी के अध्यक्षीय भाषण में कन्नड़ साहित्यकार चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि आजादी का साहित्य से गहरा संबंध हैं समाज के सभी वर्गों ने इसमें उत्साह से भाग लिया।

आम जनता को आजादी के लिए मानसिक रूप से तैयार किया। आज भी किताबें हमें जागरूक करने का कार्य बखूबी कर रही हैं। इस अवसर पर साहित्य अकादमी की गृह पत्रिका आलोक का स्वतंत्रता सेनानी हिंदी विशेषांक का लोकार्पण भी किया गया। इस मौके पर अकादमी सचिव के श्रीनिवास राव ने अमृत महोत्सव पर दो वर्षों तक आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी। संगोष्ठी में राजस्थान से मधु आचार्य, गुजरात से बलवंत जानी, मैथिली और भोजपुरी भाषा पर रामवचन राय एवं उषा किरण खान, उर्दू पर चंद्रभान, संस्कृत पर राधावल्लभ त्रिपाठी, लेखकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि बहुत से नाम हैं जिन्हें हम भुला चुके हैं।

राष्ट्रीय

साहसी लेखकों की कलम पराधीन भारत में भी आजाद थी : माधव कौशिक

-आज़ादी के अमृत महोत्सव पर साहित्य अकादमी की संगोष्ठी संपन्न

-"स्वाधीनता संग्राम में लेखक" विषय पर लेखकों ने विचार व्यक्त किए

नई दिल्ली, 15 अगस्त (हि.स.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव पर साहित्य अकादमी के दिल्ली कार्यालय में रविवार को 'स्वाधीनता संग्राम में लेखक' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि देश के साहसी लेखकों की कलम तब भी आज़ाद थी जब देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था।

संगोष्ठी की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं प्रख्यात कन्नड़ साहित्यकार चंद्रशेखर कंबार ने की। कंबार ने कहा कि आज़ादी का साहित्य से गहरा संबंध है। समाज के सभी वर्गों ने इसमें उत्साह से भाग लिया और आम जनता को आज़ादी के लिए मानसिक रूप से तैयार किया। आज भी किताबें हमें जागरूक करने का कार्य बखूबी कर रही हैं।

वरिष्ठ पत्रकार एवं राज्यसभा के पूर्व सदस्य तरुण विजय ने स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता की भूमिका को उल्लेखित करते हुए कहा कि साहित्य अकादमी भारतीय भाषाओं के साहित्य को परस्पर जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत देश की भूमि साहित्य की भूमि है और यहां जन्म से मृत्यु तक साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वतंत्रता संग्राम के समय में पत्रकारिता और क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य ने ही नहीं इनके वाचिक साहित्य ने भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने साहित्य अकादमी द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव पर दो वर्षों तक किए जाने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि अकादमी इस अवसर पर कुछ विशेष पुस्तकों का भी प्रकाशन करेगी।

कवि अग्निशेखर ने जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में, दिनेश कुमार चौबे ने असम, मेघालय और मणिपुर में स्वतंत्रता के लिए कार्य करने वाले पत्रकारों और लेखकों का उल्लेख करते हुए कहा कि इन क्षेत्रों के पत्रकारों और लेखकों की कम चर्चा होती है लेकिन यहां के पत्रकारों एवं लेखकों की भूमिका को हमें याद रखना चाहिए।

संगोष्ठी में मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी), बलवंत जानी (गुजराती), रामवचन राय एवं उषा किरण खान (मैथिली और भोजपुरी), चंद्रभान ख़्याल (उर्दू), राधावल्लभ त्रिपाठी (संस्कृत), सोमा बंद्योपाध्याय (बांग्ला), आर. वेंकटेश (तमिल), दिनकर कुमार (असमिया), विजयानंद सिंह (ओडिया), हरिराम मीणा (आदिवासी साहित्य), राजेंद्र राव (हिंदी पत्रकारिता) आदि ने अपनी-अपनी भाषाओं में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारों और इन भाषाओं के लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि बहुत से ऐसे नाम हैं जिन्हें आज हम भुला चुके हैं।

इस अवसर पर साहित्य अकादमी की गृह पत्रिका 'आलोक' का स्वतंत्रता सेनानी हिंदी विशेषांक का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

हिन्दुस्थान समाचार/पवन

Dailyhunt

आजादी का साहित्य से गहरा नाता : कंबार

नई दिल्ली (एसएनबी)। आज़ादी के अमृत महोत्सव पर साहित्य अकादमी के कार्यालय में 'स्वाधीनता संग्राम में लेखक' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं प्रख्यात कन्नड़ साहित्यकार चंद्रशेखर कंबार ने की। संगोष्ठी में स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत देश की भूमि साहित्य की भूमि है और यहां जन्म से मृत्यु तक साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि अकादमी इस अवसर पर कुछ विशेष पुस्तकों का भी प्रकाशन करेगी।

साहित्य अकादमी के कार्यालय में आज़ादी के अमृत महोत्सव पर संगोष्ठी आयोजित

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि आज़ादी का साहित्य से गहरा संबंध है समाज के सभी वर्गों ने इसमें उत्साह से भाग लिया और आम जनता को आज़ादी के लिए मानसिक रूप से तैयार किया। संगोष्ठी में मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी), बलवंत जानी (गुजराती), रामवचन राय एवं ऊषा किरण खान (मैथिली और भोजपुरी), चंद्रभान .ख्याल (उर्दू), राधावल्लभ त्रिपाठी (संस्कृत), सोमा बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), आर. वेंकटेश (तमिल), दिनकर कुमार (असमिया), विजयानंद सिंह (ओडिसा), हरिराम मीणा (आदिवासी साहित्य), राजेंद्र राव (हिंदी पत्रकारिता) आदि ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारों और इन भाषाओं के लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि बहुत से ऐसे नाम है जिन्हें आज हम भुला चुके है।